द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियां (1900 से 1920 ई)

प्रस्तुतकर्ता -

ओम प्रकाश रविदास

CBCS 2018 SEMESTER-1(G) CORE-CORCE 1 , Hindi Sahitya ka Itihas entitled as- Dwivedi Yug ki Pramukh pravritiyan

Dated :- 05/02/2019

- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इस युग का नाम द्विवेदी युग पड़ा।
- 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी का सरस्वती पत्रिका के संपादन का भार संभालना एक महत्वपूर्ण घटना है।
- समकालीन कवियों को यथार्थ और देश- प्रेम पर खड़ी बोली में रचना के लिए प्रेरित किया।
- सरस्वती पत्रिका में विभिन्न भाषाओं के अनुवाद छपे ,जैसे डिजर्टेड विलेज का अनुवाद उजड़ा ग्राम के नाम से तथा ट्रैवलर का अनुवाद श्रांत पथिक के नाम से।

प्रमुख कवि

- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
- श्रीधर पाठक
- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध
- मैथिली शरण गुप्त
- रामनरेश त्रिपाठी
- सियाराम शरण गुप्त
- सियाराम शरण गुप्त

देश प्रेम

- भारतेंदु युग की भांति देशभक्ति और राजभक्ति के बीच की दुविधा से मुक्ति
- देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपनी कविताओं में खुलकर अंग्रेजी राज का विरोध
- इस काल के कवियों ने क्षत्रियों को ललकारा

" क्षत्रिय सुनो अब तो कुयश की कालीमां को भेंट दो
निज देश को जीवन सहित तन मन तथा धन भेंट दो।"

- गुलामी को पूरी तरह से त्यागने का संदेश दिया

" छोड़ दे यह चोला बंदे , यह ना तेरे काम का
दाग लग गया है इसमें, दासता के नाम का।"

- अपराधी अंग्रेजों को दंड देने के लिए मैथिलीशरण गुप्त जयद्रथ वध में कहते हैं-

" अधिकार खोकर बैठे रहना यह महादुष्कर्म है
न्यायर्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।"

समाज -सुधार

- समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए साहित्यकारों ने रचनाएं लिखीं।
- जाति- पात, छुआ -छूत, भारतीय किसान ,बाल -विधवा ,नारी ,दहेज ,आडंबर, छल- कपट ,सांप्रदायिकता आदि विषयों पर साहित्यकारों ने लिखा।
- उपेक्षित और सामान्य व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति
- अब नायक या नायिकाएं ईश्वर अवतार ना होकर कर्म प्रधान मनुष्य होने लगे।
- श्रीधर पाठक ने बाल विधवाओं की करूं दशा पर कविता लिखी-

" बाल- विधवा श्रापवश यह भूमिका पातक भई
होत दुःख अपार सजनी निरख जग यह नठुराई।"

- नारी को अब अबला के स्थान पर सबला दिखाया गया ,उसमें त्याग और बलिदान की भावना रेखांकित किया गया-

" मुक्ति मार्ग की बाधा नारी, फिर उसकी क्या गति है।
पर मैं उनसे पूछूं जिनको मुझसे आज विरति है।"

धार्मिक उदारता

•साकेत और प्रिय प्रवास में राम और कृष्णा को आदर्श मानव के रूप में दिखाया गया।

•इस युग के कवि बुद्धिवाद से प्रभावित होकर विश्व सुख में ही अपना धार्मिक सुख देखने लगे-

" जग की सेवा करना ही है अब सब सारों का सार,
विश्व प्रेम के बंधन में ही मुझको मिला मुक्ति का द्वार।"

• नारी को भी इस क्षेत्र में अग्रणी दिखाया गया है , यशोधरा कहती है-

" मेरे दुख में भरा विश्व सुख, क्यों ना भरूं मैं फिर हामी
बुद्धम शरणम संघम शरणम धम्मम शरणम गच्छामि।"

मानवतावादी दृष्टिकोण

•इस कल के कवियों ने भगवान को भी मनुष्य के रूप में दिखाया -

" हे राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या? "

- कविता के क्षेत्र में मानवतावादी विचारधारा का पहला सूत्रपात मैथिली शरण गुप्त ने किया-

" निजी रक्त को पानी बनाकर कृषि कृषक करते यहां।
फिर भी अभागे भूख से दिन- रात मरते हैं यहां। "

नारी भावना

- नारी के ऊंचे और महान रूप का चित्रण
- उपेक्षित नारियों का इस युग के काव्य में स्थान
- नारी शिक्षा पर बल।

अतीत की गौरव गाथा

- भारत के गौरवमई अतीत के गान के माध्यम से उन्होंने वर्तमान पीढ़ी में स्वतंत्रता की एक नई संजीवनी डालने का प्रयत्न किया-

" विश्व को हम ही ने पहले ज्ञान शिक्षा दान दी"

- मैथिलीशरण गुप्त इस विषय पर लिखते हैं-

" विश्व ने जिसके पांव थे छुए, सकल देश ऋणी जिसके हुए
ललित लाम कला सब थी जहां, हरे अब भारत है कहां? "

श्रृंगार का बहिष्कार

- इस काल के कवियों ने रीतिकालीन परिपाटी पर दैहिक मांसल प्रेम पर घोर आपत्ति प्रकट की है।

- इन्होंने राम् -सीता के प्रेम में श्रृंगार तथा लक्ष्मण -उर्मिला के प्रेम में विरह की पूर्ण प्रतिष्ठा प्रदान की है।

- रीतिकालीन श्रृंगार को इस कल के कवियों ने प्रेतों से भी बढ़कर माना है-

" रति का पति तू प्रेतों से भी बढ़कर है संदेह नहीं
जिसके सिर पर तू चढ़ता है उसको रुचिता गेह नहीं
मरघट उसको नंदनवन है सुखद अंधेरी रात उसे
कुश कंटक है फुल सेज के उत्सव है बरसात उसे।"

अनुवाद की प्रवृत्ति

- गुप्त जी ने माइकल सूदन के मेघनाथ वध तथा विरहिणी ब्रजांगना का अनुवाद किया।

- श्रीधर पाठक ने गोल्ड स्मिथ के हरमिट तथा ट्रैवलर का अनुवाद क्रमशः एकांतवासी तथा श्रांत पथिक के नाम से किया।

स्वच्छंदतावाद

- इस युग के कवियों ने प्राचीन पारंपरिक काव्य रूढ़ियों से निकलकर नए काव्य विषयों पर काव्य रचना की।

- लहलहाते खेतों और खलिहानों को भी कविता का विषय बनाया गया-

" कोकिल का आलाप पपीहे की बिरहा कुल बानी।
तोता मैना का विवाद बुलबुल की प्रेम कहानी।
गाती मोहनगीत तरुणियां खेत अखेद निरातीं।
क्या ये क्षण भर को न किसी के मन का कष्ट भुलातीं।"

प्रकृति वर्णन

- प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण देखने को मिलता है।
- प्रकृति चित्रण में जीवन के प्रति एक विस्तृत दृष्टिकोण है।
- सामाजिक स्थितियों की घुटन से मुक्त होकर कवि प्रकृति में तदाकार हो जाना चाहता है-

" यह इच्छा है नदी और नालों का रूप धारूंगा
गाता हुआ गीत मस्ती के पर्वत से उतरूंगा।"

- श्रीधर पाठक कश्मीर सुषमा में लिखते हैं-

" प्रकृति यहां एकांत बैठी निज रूप निहारती
पल-पल पलटती भेष छनिक छवि छिन छिन धारति।"

खड़ी बोली की पूर्ण प्रतिष्ठा

•द्विवेदी जी ने स्वयं खड़ी बोली में काव्य रचना करके अपने समकालीन कवियों को यह संदेश दिया की खड़ी बोली अत्यधिक सहज और सरल है।

•इस युग में हमें खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य प्रिय -प्रवास प्राप्त हुआ।

•द्विवेदी जी के प्रयासों से व्याकरण शब्दों का प्रयोग शुद्ध शुद्ध किया गया।

•सरस्वती पत्रिका में छपने के लिए आने वाली रचनाओं का वे भाषागत परिमार्जन करते थे।

कला पक्ष

- काव्य विधाएं: खंडकाव्य ,मुक्तक काव्य ,प्रबंध काव्य।

- गद्य में घटना प्रधान ,चरित्र प्रधान ,ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यास और कहानियां लिखी   गईं।

- रोल ,लावणी, हरिगीतिका आदि छंदों का खूब प्रयोग हुआ।

धन्यवाद